

वह एक भले काम की लालसा रखती है

जिम राइहर (Jim Reiher), मेलबर्न · जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf · अप्रैल 2021 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

1 तीमुथियुस 3:1

यह वचन निश्चित है: यदि कोई अध्यक्ष की सेवा की लालसा रखता है, तो वह एक भले काम की इच्छा करता है। (Elberfelder CSV – जर्मन बाइबल अनुवाद)

कहा जाता है – और यह सच्चा वचन है –: ‘यदि कोई कलीसिया में अगुवाई के किसी पद के लिए प्रयत्न करता है, तो वह एक बड़े और आदरणीय कार्य की ओर बढ़ता है।’ (Neue Genfer Übersetzung)

विश्वसनीय है यह वचन: यदि कोई बिशप के पद की ओर बढ़ता है, तो वह एक भले कार्य की इच्छा करता है। (Zürcher Bibel)

क्या आपने कभी सोचा है कि बाइबल में अध्यायों का विभाजन कैसे हुआ? वह मूल दस्तावेजों में नहीं था। वह 13वीं सदी में जोड़ा गया। जब वह पाठ का अंग बन गया, तो उसने हमारे बाइबल पढ़ने और उसकी व्याख्या करने के ढंग को बदलने में योगदान दिया। आखिरकार, हम अक्सर बाइबल का अध्ययन अध्यायों में या अध्यायों के अनुसार करते हैं। हम किसी अध्याय के आरंभ से शुरू करते हैं और उसके अंत पर रुक जाते हैं। नया अध्याय कहाँ से शुरू हो, इस विषय के कुछ निर्णय काफ़ी अजीब, बल्कि गलत भी सिद्ध हुए हैं। उदाहरण के लिए, कुलुस्सियों 4:1 वास्तव में अध्याय 3 का भाग होना चाहिए था। दूसरी संभावित भूलें इतनी स्पष्ट नहीं हैं, परन्तु उन पर ध्यान देना चाहिए।

कलीसिया में प्राचीन: 1 तीमुथियुस 3:1 का विशेष मामला

बहुत से लोग 3:1 को मुख्य रूप से अध्याय 3 के शेष भाग का तर्कसंगत आरंभ मानते हैं, जिसमें प्राचीनों और सेवकों (डीकनों) के विषय में एक लंबी चर्चा है। परन्तु मेरा मानना है कि यह वास्तव में अध्याय 3 की भूमिका होने की अपेक्षा अध्याय 2 का समापन है। कलीसिया में स्त्रियों के लिए यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका अर्थ यह होगा कि पद 1 पुरुषों और स्त्रियों दोनों को प्राचीन/अध्यक्ष बनने के लिए प्रोत्साहित करता है। **यदि यह अध्याय 2 का समापन है, तो दिखाई देता है कि पौलुस दोनों लिंगों को अगुवाई के कार्यों में परमेश्वर की सेवा करने के लिए समर्थन देते हैं, बशर्ते वे विश्वास में अभ्यस्त और परिपक्व हों। हाँ, उन्होंने इफ़िसुस की कलीसिया की स्त्रियों पर अस्थायी रूप से कुछ प्रतिबंध लगाए, परन्तु वे नहीं चाहते कि इसे उनका वास्तविक लक्ष्य समझा जाए। बल्कि वे सामान्य रूप से यह जोड़ते हैं कि यदि पुरुष और स्त्रियाँ दोनों प्राचीन बनने की लालसा रखें, तो यह एक अच्छी बात है।**

अध्याय 2 में अपरिपक्व अगुवाई की समस्या

यह समझने के लिए कि मैं ऐसा क्यों सुझाता हूँ, हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि 3:1 से ठीक पहले क्या आता है: अध्याय 2:8-15। यही विवादित खंड अक्सर कलीसिया में स्त्रियों की सेवा और अगुवाई को दबाने के लिए प्रयोग किया जाता है। अध्याय 2:8-15 की पारंपरिक व्याख्या इस प्रकार की गई है कि स्त्रियों को कलीसिया की

अगुवाई और सेवा से दूर रखा जाए। परन्तु यह एक दोषपूर्ण व्याख्या है। **कम से कम हम इतना कह सकते हैं कि इस खंड को समझने के दूसरे, उतने ही वैध (बल्कि उससे भी बेहतर) तरीके हैं।** इन व्याख्याओं के बीच मुख्य अंतर यह है कि क्या हम इस खंड को सब युगों के लिए, संसार की हर संस्कृति और हर राष्ट्र के प्रत्येक मसीही के लिए एक प्रकार की सार्वभौमिक आज्ञा मानते हैं, या यह पहली सदी ईस्वी के उत्तरार्ध में इफ़िसुस की उस समय की एक समस्या से संबंधित है। दूसरे शब्दों में: क्या यह “परमेश्वर से प्रेम रखो और अपने पड़ोसी से प्रेम रखो” जैसा है, या अधिकतर “अपने दासों के साथ अच्छा व्यवहार करो – और हे दासो, अपने स्वामियों के लिए परिश्रम से काम करो” जैसा (तुलना करें 6:1-2)?

1 तीमुथियुस 2:8-15 में कलीसिया की कुछ धनी स्त्रियों की बात है – संभवतः इफ़िसुस के समाज की नई-नई विश्वास में आई स्त्रियाँ –, जो ठीक से शिक्षा पाने या नए विश्वास में परिपक्व होने से पहले ही कलीसिया में अगुवा बनना चाहती हैं।¹ वे ऐसी प्राचीन बनना चाहती हैं, जो शिक्षा दे सकें और कलीसिया में अधिकार रखें (2:12)। पौलुस बहुत स्पष्ट करते हैं: वे चाहते हैं कि स्त्रियों को ठीक से प्रशिक्षित किया जाए (2:11)। **रोचक बात यह है कि इस पद में इस खंड का एकमात्र आज्ञार्थक क्रिया-रूप है: “वह सीखे।” अर्थात् पद 11 वह है, जो पौलुस के किसी आदेश के सबसे निकट आता है: वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि स्त्रियों को शिक्षा दी जाए।** यह उनके चिंतन और लेखन का एक शिखर है। **वास्तव में यही इस अनुच्छेद की कुंजी है: पौलुस चाहते हैं कि कलीसियाओं के सब सदस्यों को विश्वास में ठीक से शिक्षा दी जाए। केवल पुरुषों को नहीं, बल्कि पुरुषों और स्त्रियों दोनों को। जब वे ठीक से प्रशिक्षित और परिपक्व हो जाएँगे, तब शिक्षा देने और अगुवाई करने के पद स्त्रियों और पुरुषों दोनों के लिए समान रूप से संभव होंगे।**

एक और शब्द, जिसका प्रयोग पौलुस इस खंड (1 तीमुथियुस 2:8-15) में विशेष रूप से स्त्रियों को संबोधित करने के लिए दो बार करते हैं, वह शब्द है जिसका अनुवाद पद 9 और 15 में अक्सर “शालीनता/मर्यादा”² किया जाता है (मैं कहूँगा: ग़लत अनुवाद किया जाता है; Elberfelder CSV फ़ुटनोट में “या संयम, या स्वस्थ बुद्धि” देती है)। इस शब्द का वास्तविक अर्थ है “स्पष्ट सोच वाला, सोच में परिपक्व और विवेकी; सोच में उलझा हुआ नहीं”। कभी-कभी इसे दूसरे नैतिक गुणों के साथ जोड़ा जा सकता है, परन्तु इसे केवल एक विशेष नैतिक गुण का अर्थ देना इसके मूल अर्थ को छीन लेना होगा। पौलुस चाहते हैं कि कलीसिया की स्त्रियाँ कलीसिया में अगुवाई के पद सँभालने से पहले स्पष्ट सोचने वाली और विवेकी हों (पद 9 में सादगी और वस्त्रों के चुनाव के संबंध में; पद 15 में विश्वास में परिपक्व होने और बने रहने के संबंध में)।

यदि 1 तीमुथियुस 3:1 इन स्त्रियों से कहा गया हो, तो?

फिर हम अध्याय 3 पद 1 पर आते हैं। वहाँ ठीक-ठीक क्या लिखा है? एक बात तो वहाँ निश्चय ही नहीं लिखी: “यह अच्छी बात है, यदि केवल पुरुष प्राचीन बनने की लालसा रखें।” नहीं। यह केवल पुरुषों से संबंधित हो सकता है। परन्तु यह उतनी ही संभावना से केवल स्त्रियों से भी संबंधित हो सकता है। **या – बहुत संभव है कि – यह पुरुषों और स्त्रियों दोनों से संबंधित है।** NIV (New International Version) ने यहाँ बेहतर अनुवाद किया है: “यह एक विश्वसनीय कथन है: ‘जो कोई अध्यक्ष बनने की आकांक्षा रखता है, वह एक उत्तम कार्य की इच्छा करता है।’” (इसी प्रकार “यदि कोई ...” वाले जर्मन अनुवाद भी – “कोई” पुरुषों और स्त्रियों दोनों के लिए हो सकता है।)

कुछ अनुवादों ने 3:2-14 के कारण (पुरुष प्राचीन, पुरुष सेवक, सेविकाएँ या सेवकों की पत्नियाँ, पुरुष सेवक) 3:1 में अंग्रेज़ी शब्द "मनुष्य/पुरुष" (man) जोड़ दिया है। **इस निर्णय के कारण बहुत से मसीही इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि सेविकाओं (स्त्री डीकनों) के पक्ष में तो कोई तर्क हो सकता है, परन्तु स्त्री प्राचीनों के लिए कोई स्थान नहीं है।** पहली दृष्टि में यह तर्कसंगत लग सकता है, परन्तु यह एक कमज़ोर तर्क है। पद 1 में "पुरुषों" या "पुरुष" के लिए यूनानी शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। न ही "वह (पुरुष)" के लिए स्वतंत्र शब्द का। परन्तु यूनानी शब्द **tis** ("कोई") का प्रयोग हुआ है। यही शब्द पुरुषों और स्त्रियों दोनों के लिए आता है। इसी प्रकार "वह (पुरुष) या वह (स्त्री) लालसा करता/करती है" के लिए प्रयुक्त शब्द "लालसा करना" की एक क्रिया-धातु है, जिसके साथ "वह (पुरुष), वह (स्त्री) या वह (वस्तु)" का प्रत्यय जुड़ा है। संदर्भ ही तय करेगा कि यह क्रिया किससे संबंधित है।

यदि हम 1 तीमुथियुस 3:1 को 2:8-15 के समापन के रूप में रखें, तो यह पद कलीसिया में स्त्रियों की अगुवाई की पुष्टि करने वाला एक सशक्त संकेत बन जाता है। क्योंकि, जैसा कहा गया, प्रयुक्त शब्द पुरुषों या स्त्रियों से संबंधित हो सकते हैं, इसलिए 3:1 का सीधा अर्थ यह हो सकता है: "यदि कोई स्त्री अध्यक्ष बनने की इच्छा रखती है, तो वह एक अच्छी बात की इच्छा करती है।" **इसका अर्थ है कि पौलुस कुछ इस प्रकार कह रहे हो सकते हैं: "इस बात पर मेरे ज़ोर देने के बावजूद कि स्त्रियों को शिक्षा दी जाए या वे सीखें, और कि जब तक वे परिपक्व और सक्षम न हो जाएँ तब तक वे शिक्षा नहीं दे सकतीं या अधिकार नहीं रख सकतीं – किसी स्त्री के लिए यह एक अच्छी बात है, यदि वह प्राचीन बनना चाहती है।"**

अध्याय 3 के शेष भाग में स्त्रियाँ

अध्याय 3:2-7 में फिर प्राचीनों की बात है; **इसमें पौलुस उस पुरुष-बहुमत को ध्यान में रखते हैं, जिससे वे उस समय बने थे।** मेरा यह अनुमान कि पद 1 पिछले पाठ का समापन है और पद 2 वास्तव में पौलुस के लिए एक नया विचार आरंभ करता है, यूनानी में पद 2 के आरंभिक शब्दों से समर्थित होता है: "यह आवश्यक है" (या "यह उचित है")। इसका अनुवाद "तो", "अब तो", "परिणामस्वरूप" या "इसलिए" किया जा सकता है। निश्चय ही पद 2 विचार की दृष्टि से पिछली बात से जुड़ा है, परन्तु वह एक नई दिशा लेता है। पौलुस अभी-अभी इस विषय में बोल चुके हैं कि स्त्रियों को सेवा के लिए प्रशिक्षित किया जाए और जब तक वे ठीक से प्रशिक्षित और विश्वास में परिपक्व न हो जाएँ, तब तक उन्हें अधिकार चलाने की अनुमति न दी जाए, और वे इस बात से समापन करते हैं कि वे हर किसी को याद दिलाते हैं कि कलीसिया में प्राचीन बनने की आशा रखना कोई बुरी महत्वाकांक्षा नहीं है। फिर वे रुकते हैं और दूसरे विषयों को उठाते हैं, जो उस समय प्रासंगिक हैं। "अच्छा ... तो अब, हमारे वर्तमान प्राचीनों के विषय में ..." इस अगले खंड (3:2-7) में कलीसिया के वर्तमान या शीघ्र नियुक्त होने वाले प्राचीनों की बात है।

यदि हम इस वाक्यांश को सँभाल सकें कि प्राचीन "एक ही पत्नी का पति हो" या "अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य हो" (जैसा कुछ लोग अनुवाद करते हैं), तो 3:2-7 को दोनों लिंगों पर लागू समझना निश्चय ही तर्कसंगत है। पौलुस यहाँ संभवतः एक "लैंगिक सामान्यीकरण" का प्रयोग करते हैं। यदि उस समय अधिकांश प्राचीन पुरुष थे, तो यह कहने का एक ढंग हो सकता है: "अपने एक जीवन-साथी के प्रति विश्वासयोग्य रहो।" मुझे 1990 का दशक याद है, जब मैं मेलबर्न के एक बाइबल स्कूल में पढ़ाता था: एक व्यक्ति को छोड़कर सभी शिक्षक पुरुष थे, और वह एक स्त्री अंशकालिक काम करती थी। जब हमारे यहाँ सामाजिक प्रकार के विशेष कार्यक्रम होते थे, तो यह आम था कि सब कर्मचारियों को भेजे जाने वाले पत्र में लिखा होता: "और अपनी पत्नियों को साथ लाइए।" इस वाक्यांश से केवल वह एक स्त्री ही बाहर नहीं हुई; एकमात्र अविवाहित शिक्षक को भी अनदेखा किया हुआ महसूस हुआ। जब मैं इस प्रकार के लैंगिक सामान्यीकरणों को याद करता हूँ, तो मुझे सिहरन होती है। मुझे इनसे चाहे जितनी

असुविधा हो: इनका अर्थ यह नहीं था कि हमारे यहाँ केवल विवाहित पुरुष शिक्षक थे। और यहाँ के कथन ("एक ही पत्नी का पति हो") के विषय में एक बात और: यदि हम ऐसी व्याख्या-पद्धति को कठोरता से लागू करें, तो "तू अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच न करना" आज्ञा भी केवल पुरुषों पर लागू होगी और स्त्रियों से उसका कोई लेना-देना नहीं होगा।

1 तीमुथियुस 2-3 पर पुनर्विचार

इसलिए 1 तीमुथियुस 2:8-3:14 के उन विभाजनों के बजाय, जो हम अक्सर देखते हैं:

- कलीसिया में स्त्रियाँ और पुरुष (2:8-15)
- पुरुष प्राचीन (3:1-7)
- पुरुष सेवक (डीकन) (3:8-10)
- स्त्री सेविकाएँ (या सेवकों की पत्नियाँ) (3:11)
- फिर से पुरुष सेवक (3:12-14)

हमें पत्री के विचार-क्रम को इस प्रकार समझना चाहिए:

- कलीसिया में स्त्रियाँ और पुरुष (2:8-3:1)
- वर्तमान स्थिति: वर्तमान अगुवों को लिंग-विशिष्ट भाषा में संबोधित किया गया है (3:2-7)
- पुरुष सेवक (डीकन) (3:8-10)
- स्त्री सेविकाएँ (3:11)
- पुरुष सेवक (3:12-14)

आप 3:2-7 की व्याख्या चाहे जैसे करें, इस लेख का केंद्र 3:1 को उभारना था। यदि इसे 2:8-15 के समापन के रूप में देखा जाए, तो यह स्त्रियों को याद दिलाता है: यदि कोई स्त्री प्राचीन बनना चाहती है, तो यह एक अच्छी बात है। **यदि आपका मत भिन्न भी हो, तो भी यह पद लिंग-निरपेक्ष है: यदि कोई भी, चाहे पुरुष हो या स्त्री, कलीसिया की अगुवाई की लालसा रखे, तो यह एक अच्छी बात है!** यदि आप इसे अध्याय 3 के आरंभ में ही रहने दें, तब भी यह दोनों लिंगों पर लागू होता है – और तब यह इस बात के पक्ष में बोलता है कि आगे का पूरा खंड भी दोनों लिंगों को सम्मिलित करता है। 1 तीमुथियुस 3:1 को पुरुषों और स्त्रियों के लिए कलीसिया में अगुवाई के कार्यों की ओर बढ़ने का निमंत्रण मानना प्रेरित पौलुस की शिक्षा का एक अत्यंत उत्साहवर्धक पहलू है।

बाइबल के इस भाग में पौलुस की शिक्षा की व्याख्याओं से स्त्रियों को गहरी चोट पहुँची है। परन्तु मैं सुझाव दूँगा कि इस खंड की इस वैकल्पिक समझ के साथ हम इस विषय में पौलुस से मेल कर सकते हैं। वे वैसे पुरुष-श्रेष्ठतावादी नहीं थे, जैसा कुछ लोगों ने उन्हें दिखाया है। वे ऐसे व्यक्ति थे, जो कलीसिया में स्त्रियों और पुरुषों दोनों को सेवा करने देने के लिए तैयार थे।

This article first appeared in the Spring 2021 issue of CBE International's Mutuality magazine (www.cbeinternational.org)

जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf, जिम राइहर (Jim Reiher) की कृपापूर्ण अनुमति से, 20 अप्रैल 2021

टिप्पणियाँ

1. इस खंड के वैकल्पिक दृष्टिकोण के विस्तृत विवरण के लिए देखें Jim Reiher, *Women: Leadership & the Church* (Melbourne: Acorn Press, 2006), 85–93। साथ ही देखें Judy L. Brown, *Women Ministers According to Scripture* (Kearney: Morris Publishing, 1996), 279–312, और Rebecca Merrill Groothuis, *Good News for Women: A Biblical Picture of Gender Equality* (Grand Rapids: Baker Books, 1997), 209–229।
2. वाल्टर बाउअर (Walter Bauer) इस शब्द का पहला और सबसे स्पष्ट अर्थ “विवेकशीलता, तर्कसंगतता, मानसिक स्वस्थता” बताते हैं। वे इसका दूसरा अर्थ “अच्छी निर्णय-क्षमता, संयम और आत्म-नियंत्रण” बताते हैं। गेरहार्ड किटल (Gerhard Kittel) भी स्पष्ट करते हैं: जब यह गौण अर्थ सामने आता है, तब भी सदा स्वस्थ सोच काम कर रही होती है। 1 तीमुथियुस 2:9, 15 में प्रयुक्त रूप नए नियम में केवल एक और स्थान पर आता है: प्रेरितों के काम 26:25। वहाँ इसका अनुवाद सदा “स्पष्ट सोच” या “विवेकपूर्ण” किया जाता है। देखें William F. Arndt, F. Wilbur Gingrich, Frederick W. Danker, Walter Bauer और William Arndt, *A Greek-English Lexicon of the New Testament and Other Early Christian Literature*. 2nd ed. (Chicago: University of Chicago Press, 1979), 802; G. W. Bromiley और Geoffrey William Bromiley, *Theological Dictionary of the New Testament*, ed. Gerhard Kittel और Gerhard Friedrich (Grand Rapids: Eerdmans, 1964), 1097–1104।